ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	Research Paper	Paper No. VBRP-28

भारतीय परिप्रेक्ष्य में पारिस्थितिकी तंत्र एवं नैतिकता का समन्वय

डॉ. ज्योति गोयल, सहायक प्राध्यापक दर्शनशास्त्र

पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) प्रकृति के उन सभी जैविक एवं अजैविक **घटकों** का समग्र रूप है, जो परस्पर एक दूसरे से जुड़े होते हैं और एक संतुलित व्यवस्था का **निर्माण** करते हैं। मानव जीवन, पशु - पक्षी, **वनस्पतियां**, जल, वायु, भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन इस तंत्र के अभिन्न अंग है। दूसरी ओर,**नैतिकता (Ethics)** मनुष्य के आचरण, **कर्तव्यों** और मूल्यों से संबंधित वह व्यवस्था है जो उसे सही और गलत का बोध कराती है। **वर्तमान** समय में पर्यावरणीय संकट, जलवायु **परिवर्तन**, जैव विविधता के क्षरण तथा प्राकृतिक **संसाधनों** के अंधाधुंध दोहन ने **पारिस्थितिकी** और नैतिकता के बीच समन्वय की **आवश्यकता** को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है।

भारतीय संस्कृति में **प्रकृति** और नैतिकता का संबंध अत्यंत **प्राचीन** एवं गहरा रहा है। यहां प्रकृति को केवल संसाधन नहीं माना गया, बल्कि उसे जीवनदाता, पूजनीय और संरक्षण योग्य माना गया है। अतः भारतीय परिप्रेक्ष्य में **पारिस्थितिकी** तंत्र एवं नैतिकता का समन्वय केवल एक आधुनिक विचार नहीं,बल्कि हमारी **सांस्कृतिक** विरासत का मूल तत्व है।

भारतीय संस्कृति में प्रकृति का स्थान : भारतीय सभ्यता और **संस्कृति** का विकास प्रकृति की गोद में हुआ है। **वेदों**, उपनिषदों, पुराणों तथा अन्य धार्मिक **ग्रंथो** में प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। ऋग्वेद में **प्रकृति** को माता और मनुष्य को उसका पुत्र कहा गया है —-

"माता भूमिः पुत्रोंहम पृथ्वीयाः।"

इस कथन में मानव और **प्रकृति** के बीच आत्मीय संबंध की भावना **निहित** है। भारतीय परंपरा में नदियों को देवी, पर्वतों को देवता तथा वृक्षों को जीवन का आधार माना गया है। पीपल, बरगद ,तुलसी जैसे **वृक्षों** की पूजा तथा गंगा, जमुना, नर्मदा आदि **नदियों** के प्रति श्रद्धा पर्यावरणीय नैतिकता का ही रूप है।

पारिस्थितिकी तंत्र और नैतिकता का संबंध : पारिस्थितिकी तंत्र और नैतिकता दोनों का उद्देश्य संतुलन एवं संरक्षण है। पारिस्थितिकी तंत्र प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखता है, जबकि नैतिकता मानव **व्यवहार** को नियंत्रित कर सामाजिक एवं प्राकृतिक संतुलन स्थापित करती है, जब मनुष्य नैतिक **मूल्यों** का पालन करता है, तब वह प्राकृतिक **संसाधनों** का विवेक

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

पूर्ण उपयोग करता है और **पर्यावरण** संरक्षण में योगदान देता है।

भारतीय दर्शन में **"अहिंसा"** का **सिद्धांत** केवल मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है, **बल्कि** सभी जीव - जंतुओं और प्रकृति पर भी लागू होता है। महात्मा गांधी ने भी कहा था कि **पृथ्वी** प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन किसी एक व्यक्ति के लालच को नहीं। यह विचार पारिस्थितिकी एवं नैतिकता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण : भारतीय दर्शन में प्रकृति और मानव के संबंध को अत्यंत व्यापक रूप से समझाया गया है जैसे —

1.वैदिक दृष्टिकोण : वेदों में प्रकृति के विभिन्न तत्वों— अग्नि, वायु, जल,पृथ्वी और आकाश की पूजा की गई है। इससे यह संकेत मिलता है कि मानव को प्रकृति के प्रति **सम्मान** और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए।

2.जैन दर्शन : जैन धर्म अहिंसा को सर्वोच्च धर्म मानता है। इसमें सूक्ष्मजीवों तक को हानि न पहुंचने की शिक्षा दी गई है। यह विचार पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम रहा है।

3.बौद्ध दर्शन : बौद्ध धर्म करुणा, दया और सह - अस्तित्व पर बल देता है। भगवान बुद्ध ने सभी प्राणियों के प्रति समान संवेदना रखने की शिक्षा दी है,जो पारिस्थितिक संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

4.गांधीवादी दृष्टिकोण : महात्मा गांधी का "सादा जीवन उच्च विचार" का सिद्धांत प्राकृतिक संसाधनों के सीमित एवं संतुलित उपयोग पर आधारित रहा है। उन्होंने उपभोगवाद के स्थान पर संयम और आत्मनियंत्रण को महत्व दिया था।

वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियां : आज भारत सहित पूरा विश्व अनेक **पर्यावरणीय** समस्याओं का सामना कर रहा है जैसे –

1.वनों की कटाई और जैव **विविधता** का ह्रास।
2.जल, वायु एवं भूमि **प्रदूषण**,मिट्टी का कटाव,भूस्खलन जैसी **समस्याओं** का सामना पूरा विश्व कर रहा है।
3.जलवायु परिवर्तन और **वैश्विक** तापमान में वृद्धि।
4.प्राकृतिक संसाधनों का **अत्यधिक** दोहन।
5.प्लास्टिक एवं औद्योगिक अपशिष्टों की समस्याआदि।

इन चुनौतियों का मूल कारण मानव की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति और नैतिक मूल्यों का क्षरण है। जब मनुष्य केवल **आर्थिक** लाभ को प्राथमिकता देता है और प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियां को भूल जाता है, तब पारिस्थितिक असंतुलन **उत्पन्न** होता है।

पारिस्थितिक नैतिकता की आवश्यकता : वर्तमान समय में **पर्यावरणीय** संकट से निपटने के लिए केवल **वैज्ञानिक** उपाय पर्याप्त नहीं है। इसके लिए नैतिक चेतना का विकास भी आवश्यक है। **पारिस्थितिक** नैतिकता निम्नलिखित मूल्य पर **आधारित** होनी चाहिए —-

a.प्रकृति के प्रति सम्मान।
b.संसाधनों का संतुलित उपयोग।
c.भावी पीडियों के प्रति **उत्तरदायित्व**।
d.जैव विविधता का संरक्षण।
e.सतत विकास की अवधारणा को अपनाना।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने नैतिक **कर्तव्यों** को समझें और पर्यावरण संरक्षण को अपना दायित्व माने तो अनेक **पर्यावरणीय** समस्याओं का समाधान संभव हो जाएगा।

भारतीय परंपराएं और पर्यावरण संरक्षण : भारत में अनेक लोक परंपराएं और सामाजिक आंदोलन पर्यावरणी नैतिकता के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

चिपको आंदोलन : उत्तराखंड में प्रारंभ हुआ चिपको आंदोलन वृक्षों की **रक्षा** के लिए जनभागीदारी का अनूठा उदाहरण है। इसमें लोगों ने पेड़ों से चिपककर **उसकी** कटाई का विरोध किया था।

बिश्नोई समुदाय : राजस्थान का **बिश्नोई** समाज प्रकृति संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। इस समुदाय में वन्य जीवों और वृक्षों की रक्षा को धार्मिक कर्तव्य माना है।

पारंपरिक जल संरक्षण : भारत में तालाब, बावड़ी,कुएं और वर्षा जल संचयन जैसी प्रणालिया पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में और स्थानीय पारिस्थितिकी संतुलित रखने में योगदान देती रही है। वर्तमान **में** भारत का युवा (JEN- Z)अपने स्तर पर **छोटी** - बड़ी नदियों के संरक्षण में, वनों और जीव - जंतुओं के संरक्षण में अपना योगदान दे रहा है।

शिक्षा और नैतिक जागरूकता की भूमिका : पर्यावरण संरक्षण के लिए **शिक्षा** अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। विद्यालयों, **महाविद्यालयों** तथा विश्वविद्यालयों में **पर्यावरणीय** शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में **प्रकृति** के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जा सकती है। साथ ही नैतिक शिक्षा के **माध्यम** से उन्हें यह समझाया जा रहा है कि **पर्यावरण** संरक्षण केवल कानूनी दायित्व नहीं है बल्कि नैतिक उत्तरदायित्व भी है। परिवार, समाज, धार्मिक संस्थाएं और मीडिया भी पर्यावरणीय नैतिकता के प्रसार में **महत्वपूर्ण** भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय परिप्रेक्ष में **पारिस्थितिकी** तंत्र एवं नैतिकता का समन्वय मानव और प्रकृति के बीच संतुलित संबंध स्थापित करने का आधार है। भारतीय संस्कृति, दर्शन और परंपराएं सदैव प्रकृति के प्रति सम्मान, **संरक्षण** और सह - अस्तित्व का संदेश देती रही है। वर्तमान पर्यावरणीय संकटों के समाधान के लिए वैज्ञानिक उपाय के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना आवश्यक है। जब मनुष्य प्रकृति को केवल संसाधन नहीं **बल्कि** जीवन के सहचर के रूप में देखेगा तभी सतत् विकास और पर्यावरणीय संतुलन संभव हो सकेगा। अतः पारिस्थितिकी तंत्र और नैतिकता का समन्वय वर्तमान और **भविष्य** दोनों की आवश्यकता है, जो मानवता तथा समस्त जीव जगत के कल्याण का मार्ग **प्रशस्त** करता है।